रीतिमुक्त काव्यधारा की विशेषताएँ

1. श्रृंगार का उदात्त चित्रण-इस काल में चित्रित प्रेम विलास एवं काम मूलक न होकर उदात्त रूप में चित्रित हुआ है। इसमें भाव गाम्भीर्य एवं वियोग पक्ष का प्राधान्य है। प्रेम का वर्णन भी दूती या सखियों के माध्यम से न होकर आत्मा की पुकार एवं प्रेम की आन्तरिक भावना के रूप में हुआ है। इसमें चमत्कार प्रदर्शन की प्रवृत्ति का अभाव है और तीव्र एकान्तिक प्रेम-भाव का निरूपण है। इसमें वासनोन्मुखता का अभाव है।

2 .प्रेम की पीर-उन्मुक्त कवियों ने विरहानुभूति का मर्मस्पर्शी चित्रण किया है और वियोगान्तर्गत प्रेमी-हृदय की अन्तर्दशाओं का व्यंग्योक्तियों और उपालम्भों द्वारा मार्मिक वर्णन किया है। इनकी प्रेम की पीर सूफी-प्रेम की पीर से प्रभावित है।

3. प्रेम का एकान्तिक चित्रण-रीतिमुक्त काव्य में हमें प्रेम का एकतरफा चित्रण फारसी की शैली पर मिलता है। स्वच्छन्दतावादी कवियों ने प्रेम की पीर फारसी काव्यधारा की वेदना की प्रवृत्ति के साथ सूफी-कवियों से ग्रहण की है।

4. **भावप्रधान संयोग वर्णन**-रीतिमुक्त काव्य में संयोग पक्ष का भी मार्मिक वर्णन है। वहाँ भी वर्णन की मुद्राओं और हाव-भावों के हृदय पर पड़े प्रभाव का ही निरूपण अधिक हुआ है।

5. **श्रीकृष्णलीला का प्रभाव**-रीतिमुक्त काव्य में श्रीकृष्ण की लीलाओं का व्यापक प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। रीतिमुक्त कवियों ने श्रीकृष्ण की अलौकिक आलम्बन के सहारे अपने उन्मुक्त प्रेम की भावधारा को प्रवाहित किया है।

6. मुक्तक शैली-रीतिमुक्त काव्य की रचना कवित्त और सवैया छन्दों के माध्यम से मुक्तक शैली में हुई है।

7. अलंकरण का प्राधान्य-रीतिमुक्त काव्य में अलंकार की प्रवृत्ति पाण्डित्य प्रदर्शन के लिए न होकर सूक्ष्म अन्तर्वृत्तियों का परिचय देने एवं प्रेम की विषमता का निरूपण करने के लिए दिखाई पड़ती है। रीतिमुक्त काव्य में मुहावरे और लोकोक्तियों के विधान से स्वाभाविकता आ गई है : तुम कौन सी पाटी पढ़े हौ लला, मन लेहु पै देहु छटांक नहीं।

8. **ब्रजभाषा का प्रयोग**-इन कवियों ने ब्रजभाषा में विशुद्धता एवं प्रौढ़ता के साथ माधुर्य का और कहीं-कहीं फारसी के शब्दों का भी प्रयोग किया है।

धन्यवाद